

गुरुद्वारा साहिब जी की इमारत का एक दृश्य

Composed & Printed at :
Girdhar Printing Press, 0172-657664, 650423

॥ ੧ਓ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ॐ

तपतीरे मनीकरण के हरी हरो
सायुजय मुक्ती प्रदौ

हरी हर

अरध नावीशवरं छेतरं
सरव सिधी प्रदाइकम

ੴ

ॐ

महातम

इतिहासिक गुरुद्वारा श्री गुरू नानक देव जी

श्री हरी हर घाट बाबा मनीकरण



श्री गुरू नानक प्रभ जोती सरूपं   श्री गुरु नानक देव जी का आगमन:मनीकरण: स०१५१० हरी हरो सायू मुक्ति प्रदौ॥

श्री गुरू नानक प्रभ जोती सरूपं

श्री गुरु नानक देव जी का आगमन: मनीकरण: स०१५१० हरी हरो सायू मुक्ति प्रदौ॥

एक पुरातन चित्र जिसमें मरदाने को रोटियां बना कर गर्म पानी के चश्मे में पाते हुए दिखाया गया है।

प्रचीन तथा महान तपो स्थान तीर्थ राज मणीकरण

का

महात्म्य तथा इतिहास

मणीकरण प्राचीन समय का महान् तीर्थराज है इसे ब्रह्मंड पुराण में सब से उत्तम कुलांत पीठ में स्थित श्रेष्ठ कहा गया है यहाँ प्रकृति के सुन्दर चारों ओर एकांत शान्तिमय रमणीक वातावरण में परमार्थ के उँचे, स्वच्छ तथा सघन रहस्य छिपे है।

ब्रह्मांड पुराण में इस तीर्थ का नाम वेद ने हरि हर कहा है जल विष्णु है, अग्नि शंकर है, सायुज्य मुक्ति को देने वाला यह स्थान है।

तपतीरे मणीकरण के हरि हरो सायुज्य मुक्ति प्रदो।

इसका दूसरा नाम अर्द्धनारीश्वर है।

अर्द्धनारीश्वरं क्षेत्रम् सर्वसिद्धि प्रदाकयम्।

यहां भगवान शंकर ने पार्वती के साथ ग्यारह सहस्त्र वर्ष निवास करके तप किया है। इस तीर्थ का तीसरा नाम चिन्तामणि है, मणि में अग्नि है तथा अग्नि में मणि है। यह मानवी मन की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाला स्थान है सवेरे उठते समय, स्नान करने की इच्छा को पूर्ण करने हेतु सरोवर में गर्म पानी तैयार होता है। गर्म चश्में के पानी में बनी हुई चाय केवल आधा मिट्ठा डालकर ही बहुत स्वादिष्ट बन जाती है। फिर रोटी खाने की इच्छा होती है। रोटी केवल आधे घण्टे में तैयार हो जाती है। इस में आलू, मांह, मोठी, मुँगी साबुत, खीर, मीठे चावल प्राकृतिक ढंग से कम समय में भाप से पक कर अति स्वादिष्ट भोजन तैयार हो जाता है। सहस्त्रों की गिनती में पहुंचे यात्रियों के भोजन की सुविधा कम समय में प्राप्त हो जाती है, जिस से मनुष्य को भोजन के साथ मानसिक तृप्ति भी मिलती है।

महादेव तथा पार्वती की कथा का वर्णन इस प्रकार है। यहां पर पार्वती जी का क्रीड़ा स्थल था। उन्ही के पास चिन्तामणि थी, भगवान् शंकर के पास कल्प वृक्ष था और कामधेनु ऋषियों को अधिकार प्रति मिलती है मन की समस्त

इच्छाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य इन वस्तुओं में है एक दिन जल क्रीड़ा करते हुए पार्वती जी की चिन्तामणि गिर पड़ी जो सीधे पाताल में शेषनाग जी के पास पहुंची। इस के अधिकारी या तो भगवान् शंकर है या शेषनाग हैं। पहले भक्त भगवान् शँकर हैं, उनकी राशि मंगल है तथा साज अमंगल है:

नाम प्रताप शंभू अविनाशी
साज अमंगल मंगल राशि

भगवान् मसान में भी बैठ जाये तो शहर बन जाते हैं।
तीन लोक बसती में बसावें
आप बसें बैराने में
प्रथम वेद ब्रह्म को दीए,
बने वेद के हितकारी।
विष्णु को दीना चक्र सुदर्शन,
लक्ष्मी सी सुन्दर नारी ।
कामधेनु इंदर को दे दी,
अहिरावण से बलकारी ।
कुबेर भगत को कर दिया तुमने,
सब वस्तु का भंडारी।
अपने पास पात्र नहीं रखते,
रखते खप्पर दोऊ कर में।
ऐसे दीन दिआल विधाता,
कउड़ी नहीं रखते घर में।
अमृत सब देवताओं को दीआ,
आप हलाहल पान किया ।
ब्रह्म ज्ञान दे दिया उसी को,
जिसने तुमरा ध्यान किया ।
भागीरथ को गंगा दीनी,
सब जग ने इस्नान किया।
बड़े बड़े पापिओं का प्रभु जी,
पल भर में कल्याण किया ।

आप नशे में चूर रहें,
पीएं भंग नित खप्पर में ।
अपने पास पातर नहीं रखते,
रखते खप्पर दोऊ कर में ।
ऐसे दीन दिआल विधाता,
कउड़ी नहीं रखते घर में ।
गढ़ लंका रावन को दीनी,
बीस भुजां दस सीस दीए।
श्री राम को धनुष बाण दीने,
तैने तो जगदीश दिए ।
मनमोहन को मोहनी दे दी,
मोर मुकट से सीस दिए।
मुक्ति हेत कांशी में वासा,
भगतों को विश्वास दिया ।
अपने पास पातर नहीं रखते,
रखते खप्पर दोऊ कर में ।
ऐसे दीन दिआल विधाता,
कउड़ी नहीं रखते घर में ।
मुनी नारद को वीना दीनी,
गंधर्बों को राग दिया ।
करम कांड ब्राह्मण को दीना,
सन्यांसी को त्याग दिया ।
जिस पर तुमरी हो गई किरपा,
तिस पर तें अनुराग किया ।
जिस ने गाया तिस ने पाया ,
महादेव तेरे दर में ।
अपने पास पातर नहीं रखते,
रखते खप्पर दोऊ कर में ।

ऐसे दीन दियाल विधाता,
कउड़ी नहीं रखते घर में ।

दूसरे भक्त शेषनाग जी है। यह अपनी सहस्त्र जीभों से नामी के नये नये नाम बनाकर श्वास श्वास सिमरन करते हैं। जो नाम एक बार उचारते हैं वह दूसरी बार नहीं लेते।

इस तरह भगवान् शँकर ने गणों को आज्ञा दी कि मणि की तलाश करो। परन्तु मणि प्राप्त न हुई, इस पर महादेव क्रुद्ध हो कर अपना तृतीय नेत्र-महां प्रलय अग्नि-नेत्र खोलने लगे जिस पर सारी पृथ्वी कम्पायमान हो गई। भगवान् शँकर के नेत्रों से नैनां देवी प्रकट हुई, इसी लिए मणीकरण नैनां देवी का जन्म स्थान है। पाताल में शेषनाग सोचने लगे कि त्रिलोकीनाथ क्रोध कर रहे हैं, क्या कारण है? अभी प्रलय का समय तो हुआ नहीं, फिर विचार किया कि मणि का कारण है। नैनां देवी ने शेषनाग जी को जा कर कहा अगर तेरे पास मणि है तो दे दे, नहीं तो भगवान् क्रुद्ध होंगे।

शेषनाग जी ने ऊर्ध्व धार अथवा फुहारे द्वारा मणि भेंट कर दी। इस कारण इसका नाम मणीकरण पड़ा । यहां तक ही नहीं बल्कि भगवान् शिव को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने अनेकों मणियां भेजनी आरम्भ कर दीं। यह देखकर भगवान् शँकर ने पार्वती को कहा कि अपनी मणि को पहचान लो तथा शेष मणियों को श्राप दिया- अगर रहना हो तो पत्थर रूप में रहे ताकि कलियुग में जीव आकर झगड़ा न करें। यह मेरा स्थान सतयुग में प्रगट होगा।

यह बड़ा शक्तिशाली तीर्थ है, इस की प्रशंसा महान तथा असीम् है। भगवान् शिव बार-बार कहते हैं।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं मापस्यक निरूपितम् ।।
ऊर्ध्वं धारादि कुँडे मापोनाधिके भुव पावनम् ।।

महादेव जी मणीकरण क्षेत्र में बहुत प्रसन्न थे। उन को इस स्थान से इतना प्यार था कि काशी में भी मणीकरण घाट बनवाया।

यह समस्त इलाका गर्म है। यहां से सात मील पीछे से पार्वती के किनारे-किनारे गर्म पानी के चश्में हैं तथा यहां से सोलह मील आगे तक यही चश्में साथ साथ चलते हैं। मणीकरण गर्म पानी तथा पहाड़ के आश्चर्य से भरपूर हैं, इसमें

सोना, चाँदी, अबरक, काले तथा सफेद बिलोर की खानें है, हीरा, नीलम भी मिलता है। आधुनिक वैज्ञानिको की खोज ने जरी के पास युरेनियम को प्राप्त किया है तथा एक जर्मनी विज्ञानिक के अनुसार मणीकरण के गर्म चश्में में रेडियम मौजूद है क्योंकि इस का पानी उबल रहा है। सल्फर (गंधक) हो तो पानी केवल गर्म हो सकता है, उबल नहीं सकता। अत: यह बिना किसी खार या और मिलावट के शुद्ध स्वच्छ तथा निर्मल न केवल पीने के लिए स्वादिष्ट है बल्कि इस में बिमारियों का नाश करने वाले सेहत की रक्षा हेतु कई गुणों से भरपूर लाभकारी तत्व मौजूद हैं। इसी को रेडीयम कह दो या शँकर का तीसरा नेत्र कह दो, चाहे चिन्तामणी कह दो केवल नाम का भेद है, वस्तु एक ही हैं ।

यहां पर खड़े हो कर ऊपर की ओर दृष्टि लगायें तो पहाड़ की चोटियां दिखाई देती है इसको हरिन्द्र पर्वत कहते है। इस के ऊपर ब्रह्म सरोवर है जहां ब्रह्म जी ने तप किया था। ब्रह्म गंगा इसी ब्रह्म सरोवर से निकल कर आधे मील पर आकर पार्वती से मिल जाती है। यहां से अढ़ाई मील पर रूप गंगा है, रुप नाम चांदी का है। इस जगह गर्म जल का चश्मा व चांदी की खान है। यहां से आगे चार मील तक चश्में ही चश्में है मणीकरण से बारह मील पर रुद्र नाग का शीतल चश्मा है जिस का जल नाग के फन के रुप में निकलता है। यह पवित्र स्थान है तथा कुल्लू इलाके के समस्त देवता यात्रा तथा स्नान करने हेतु आते हैं। यहां तक मनुष्य आबादी है, आगे नहीं बल्कि प्रकृति अपने नये रूप में दृष्टिगोचर होती है।

रुद्र नाग से चार मील दूर खीर गंगा है, इसकी ऊँचाई साढ़े दस हजार फुट है। यह स्थान भी गर्म पानी से सुसज्जित है, इसकी कथा अद्‌भूत है। खीर गंगा के नाम के पीछे ऋषियों, मुनीशवरों के अलौक्कि जीवन की झलक दिखाई देती है। पुरातन काल में यहाँ पर खीर या दूध बहता था जो ऋषि महाऋषि पीकर निर्वाह करते थे । इस अनोखी धरती पर पहले शंकर पार्वती तथा फिर सप्त ऋषियों ने तपस्या की, यहां संत कुमार के बाद में इन्हीं के अवतार स्वामी कार्तिक जी ने भी तक किया था। संत कुमार समाधी में लीन थे। वहां से शंकर और पार्वती जी गुजरे, उन्होंने आगे उठकर शंकर भगवान् को प्रणाम न किया। पार्वती जी को क्रोध आया तथा कहा कि त्रिलोकी नाथ हैं और तुम ने नमस्कार नहीं किया, भगवान् कहने लगे कि इस में कोई अंतर नहीं। यह हृदय में भी मेरे ध्यान में स्थिर हैं और बाहर भी मैं हूं। परन्तु पार्वती ने फिर भी अपमान मान कर संत कुमार को शूद्र हो जाने

का श्राप दे दिया। उनकी समाधी खुल गई और तथास्तु कह कर स्वीकार कर लिया। संत कुमार नित्य क्रिया को निपटाने के पश्चात् फिर समाधी में लीन हो जाया करते थे।

कुछ समय पश्चात् पार्वती जी को पश्चाताप हुआ। उन्होंने आकर कहा "वर मांगो" संत कुमार का उत्तर था कि वैसे तो मैं सुखी हूं परन्तु माता! अगर आप प्रसन्न होकर वर देना चाहते हो तो मुझे ऐसा शरीर दे दो जिस में टट्टी पेशाब बैठे ही हो जाये और नफरत न हो। पार्वती जी फिर गुस्से में आई और बोलीं ऐसे तो ऊँट हुआ करते हैं और फिर श्राप दे दिया। संत कुमार ऊँट के रूपमें बहुत संतुष्ट रहने लगे उन के अन्दर ज्ञान अवस्था का नाश तो हो नहीं सकता था। वह हरे हरे पते खा कर फिर समाधी में लीन हो जाते थे। कुछ सयम पश्चात् फिर पार्वती जी ने आकर कहा कि "वर मांगो"। संत कुमार वैसे ही अडोल थे बोले जब तक मेरी प्रारब्ध है, मेरा यही शरीर बना रहे। माता पार्वती अपने चित में अनोखे प्रभाव से झूम कर बोले, "आप तो निर्वास हो, कुछ मांगना नहीं चाहते, आप मुझे वर दो"। उन्होंने पूछा, "माता मांगों क्या चाहते हो" पार्वती जी ने इच्छा प्रकट की कि मेरे उदर से जन्म लो, इस तरह संत कुमार स्वामी कार्तिक होकर पार्वती जी के घर जन्मे। इनके लिए खीर या दूध की गंगा निकाली गई थी।

त्रेता युग में यहां पर परशुराम जी हुए। इन के पिता ऋषि जमदाग्नि का सहस्त्र बाहु राजे ने सिर काट दिया था कयोंकि परशुराम जी के पास कामधेनु थी जो उन्होंने सहस्त्र बाहु राजे को देने से इन्कार कर दिया था। इसलिए परशुराम ने विचार किया कि कलयुगी जीव क़लेश या निक्षेष्ता न करें, खीर गंगा को तीन युग प्रति जल बन जाने का श्राप दिया तथा कहा सतयुग में फिर खीर या दूध की गंगा बनना है। इस के जल में मलाई और मक्खन जैसी चिकनाई है जिस में स्नान करना बहुत सुखदायी है। यहां चारों और प्राकृतिक सौंदर्य का मनमोहक दृश्य है। भोज पत्रों के वनों से सुसज्जित यह स्थान अखरोट, जंगली बादाम, गुच्छी, ढीगरी, वनफशां, जंगली गोभी, जामुन की उपज से मालामाल है और कई प्रकार की जड़ी बूटियों से भरपूर जंगल है। स्वाभाविक है कि ब्रह्मज्ञान तथा सहज आनन्द के अभिलाषी खोजी जिज्ञासु रूहानी खजाने की तलाश में इधर खिचे आते है। परमेश्वर की कुदरत की अपार लीला है। गुरु नानक साहिब जी का कथन रसना पर आ जाता है- 'बलिहारी क़ुदरति बसिआ तेरा अंत न जाई लखिआ'। खीर

गंगा से दस मील आगे भीमसेन का बनाया हुआ पांडव पुल है। यहां पांडवों ने खेती की थी, अब तक यहां जगली चावलों के खेत मौजूद हैं और चौवीस मील के फासले पर मान तलाई है। मान सरोवर त्तिबत में स्थित है। यह पार्वती की निवास स्थान है, यहां उत्पन्न होकर गुप्त चलती हुई यह नदी मान तलाई में प्रकट होती है। चक्रवर्ती राजा मानधाता ने मान तलाई तथा मानसरोवर बनाए हुए हैं। यह भू-मंडल के आभूषण थे।

मानधाता सो महीपति अलंकार भूतोगत ।

इन्होंने दूसरा सूर्य बनाया था जो सारी पृथ्वी की परिक्रमा करता था । इस से मानधाता ने अपने राज्य में रात्रि के समय भी अन्धेरा नहीं होने दिया था।

पश्चात् कलियुग में श्री गुरू नानक साहिब जी ने अवतार धारा;

कलि तारन गुरू नानक आया ।

(भाई गुरुदास जी)

सच्चे पातशाह पारब्रह्म स्वरुप सत गुरु नानक देव जी सांसारिक जीवों का उद्धार करने हेतु तीसरी उदासी करते हुए स: 1574 में मणीकरण पहुंचे सच्चे साहिब के पवित्र चरणस्पर्श से यह धरती अधिक महान बन गई गुरु साहिब के साथ भाई बाला, और भाई मरदाना भी थे ।

यहां पर पहुंचने से पूर्व अन्तर्यामी सतिगुरु नानक देव जी भुन्तर की धरती पर यहां के निवासियों का कल्याण करने के लिए शहर की रमणीक वादी में कुछ समय ठहरे थे। इसका प्रमाण भाई बाले वाली जन्मसाखी के पृष्ठ 485 पर भुटंतर देश के राजे साथ साखी के शीर्षक नीचे मिलता हैं। गुरु साहिब का महान संतोषी रुप में पहुंचना सुनकर भुटंतर निवासी दर्शन करने के लिए पहुंचने लगे। वहाँ के राजा ने भी चर्चा सुनी तो उन्होंने भी कई पदार्थों की भेंटे लेकर गुरु साहिब को आकर नमस्कार किया। गुरु बाबे की आज्ञा पाकर राजा ने यह समस्त पदार्थ वस्तुएं परमेश्वर के नाम पर गरीबों में बांट दी, पश्चात् राजा ने प्रार्थना की, हे सच्चे गुरु जी यहां पर पशम और चावल के अतिरिक्त और कोई अनाज पैदा नहीं होता। गुरु साहिब ने राजा से अनाज मंगवा कर सारी जगह उस का छींटा दे दिया तथा वर हुआ कि इस धरती पर भरपूर अनाज होगा, सोना, चांदी की खानों से इलाके की अमीरी बढ़ेगी । इस प्रकार राजा और प्रजा बहुत प्रसन्न हुये ।

मणीकरण स्थान को साहिब के चरण स्पर्श की प्राप्ति सम्बन्धी जानकारी ज्ञानी ज्ञान सिंह जी द्वारा लिखी जन्मसाखी के पृष्ठ 165 पर इन शब्दों द्वारा वर्णन है।

तवारीख गुरु खालसा पृष्ठ 165 :-

श्री गुरु नानक साहिब जी ने 15 असु (आश्विन) 1574 विक्रमी को भाई बाले मरदाने को संग लेकर खंड की सैर करने का कार्य आरम्भ किया। गुरु जी कलानौर, गुरदासपुर, दसुहे के बीच में चलते हुए त्रिलोकीनाथ, पालमपुर, गुरेढ़न कांगड़े होते हुए ज्वालामुखी देवी के मंदिर पास जा पहुंचे। जहां पर अब गोरख टीले से ऊपर धर्मशाला है। यहां पर अर्जुन नागा तप करता था, इसको ज्ञान का प्रकाश देकर बाबा जी ने कल्याण किया। यहां से चल कर मंडी वाले राजा को सच्चे प्रभु की भक्ति में लाया और आप रिवालसर पहुंच गये। यहां पर छोटे-बड़े सात टीले पत्थर के, झील में तैरते फिरते देख कर कुदरत करतार की देखते हुए चम्बे की सैर करके कुल्लू के राज्य में बिजली महादेव जा कर देखा। इस पहाड़ पर अनेकों लोगों को ज्ञान का प्रकाश देकर बाबा जी ने मुक्त किया। फिर ब्रह्म कोठी में होते हुए मणीकरण तीर्थ पर जा बिराजे। वहां की आश्चर्यजनक लीला देखकर खीर गंगा नदीं की झांकी लेकर ब्यास नदी के पार वनो की ओर ऊपर पहुंचे। दूण कहलूर को देखते हुए कीरतपुर के पास जा बैठे।

उपरोक्त साखी से सतिगुरु का मणीकरण स्थान पर पहुंचना तथा उस के इर्द गिर्द इलाके का उद्धार करना सपष्ट है। इस तरह भाई बाले की जन्मसाखी में पृष्ठ 387 पर निम्न अनुसार वृतांत अंकित किया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी जीवों को उद्धार करते हुए मणीकरण पहुंचे तो मरदाने ने कहा हे सतिगुरु जी अगर आज्ञा करो तो इस धरती में से आहार लेकर आऊँ तो गुरु जी ने कहा, अच्छा भाई तेरी इच्छा। यह सुन कर मरदाना उठ कर उस गांव में जा पहुंचा। उन लोगों ने मरदाने को रसद दी। गुरु जी ने कहा मरदानियां। श्री वाहिगुरु कह कर यहाँ से पत्थर उठा। जब मरदाने ने वहां से पत्थर उठाया तब उस पत्थर के नीचे से बड़ा कुदरत का गर्म कुँड निकल आया। वचन हुआ इस कुँड में रोटियां बनाकर डाल दे तथा अनाज है तो कपड़े में बांध कर डाल दे, परन्तु वाहिगुरु कह कर जब मरदाने ने गुरु जी का वचन सुना, उसी समय रोटियां बना कर मरदाने ने उस गर्म कुँड में डाल दीं और अनाज कपड़े में

बांध कर डाल दिया।

जब मरदाने ने रोटियां और अनाज डाला और सभी कुछ ही डूब गया तो मरदाने ने कहा, हे गुरु जी यह तो अनाज हमारा वैसे ही गया। तो गुरु नानक जी ने वचन किया- मरदानियां तूं वाहिगुरु कह- सच्चे पातशाह जी अगर हमारा अनाज निकल आए तो मैं एक रोटी तेरे नाम की दूँगा। जब मरदाने ने यह प्रार्थना की तो रोटियां तथा समस्त अनाज पक कर ऊपर आ गया- तो गुरु जी ने कहा- सुन मरदानियां इस तरह जो मनुष्य श्री परमेश्वर जी के नाम से देता है तो उस का डुबा हुआ भी निकल आता है- यह सुन का मरदाना श्री गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा, कृपा निधान जी, आप धन्य हो जी। तो यह बात सारे शहर (गांव) में सुनी गई-भाई, यह फकीर तो कोई परमेश्वर का प्यारा है। यह तो कोई महापुरूष बड़ा कलावान है। फिर इस देश के राजा ने सुना, वह वजीर मसद्दी तथा राज्य के लोगों को साथ लेकर आया और सभी ने गुरू नानक देव जी के चरण स्पर्श किये।

गुरु नानक देव जी ने वचन किया हे परमेश्वर के लोगो :

वासुदेव सर्वत्र महि ऊन न कतहू ठाए ।।

अंतरि बाहरि संगि है नानक काए दुराए ।।

वह परमेश्वर सर्व विद्यमान है। कोई ऐसा स्थान नहीं जहां पर वह नहीं है। परमेश्वर, अंग संग है। हर जगह लोक परलोक में सदा सहायक है। वह किसी से अपरिचित नहीं। आप भी उस परमेश्वर के नाम का जाप करो तुम्हारा भी भला होगा। आपका कल्याण तभी होगा। जब आप अपनी कमाई में से साधु संतों की सेवा करोगे, यहां पर धर्मशाला बनवाओगे, आने वाली संगतों की सेवा करोगे तो परमधाम को प्राप्त करोगे ।

गुरु इतिहास में वर्णन आता है कि साहिब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज पांच प्यारों को साथ लेकर मणीकरण दर्शन करने के लिए रियासत मंडी से मणीकर्ण पहुंचे थे।

उपरोक्त दोनों साखियाँ इस बात की साक्षी हैं कि गुरू महाराज ने अपने चरण स्पर्श से इस धरती को पवित्र किया। सतिगुरू द्वारा प्रगटाया वह गर्म चश्मा अभी तक उसी तरह चल रहा है और उस में परसादे पकते है।

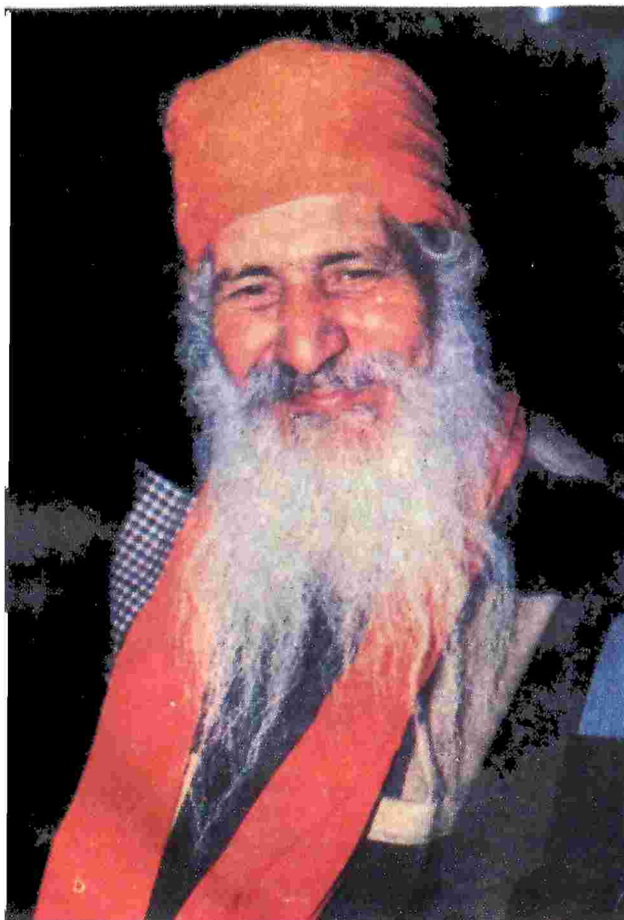
श्री पंजा साहिब (हसन अबदाल पाकिस्तान) की साखी तो समस्त जगत में प्रसिद्ध है। वहां सतिगुरू जी ने अपने हाथ की सोटी पहाड़ की जड़ में मारी जिससे ततकाल ही उस जगह से पानी की धारा निकल पड़ी और - वली कंधारी की ओर से फैंके बड़े पत्थर को अपने पंजे से रोक कर उसका घमंड तोड़ा। शीतल जल का चशमा आज भी चलता है। पंजा आज भी मौजूद है, परन्तु हम उस स्थान के खुले आम दर्शन दीदार नहीं कर सकते पाकिस्तान पासपोर्ट लेकर जाना पड़ता है। परन्तु मणीकरण कुल्लू का यह स्थान जहां सतिगुरू जी ने मरदाने से पत्थर उठवा कर गर्म जल का कुँड प्रगट किया, हमारे देश में है और इतने मनमोहक प्राकृतिक वातावरण में है कि दर्शन करके तन मन प्रसन्न हो जाता है तथा स्वयं मुख से निकलता है:

"धन नानक तेरी बड़ी कमाई"

महा ऋषि वेदव्यास जी भविख्त पुरान के 28 वें पंन्ने के 33 वें श्लोक से 44 वें सलोक तक गुरू नानक साहिब के आगमन के लिए इस प्रकार फुरमाते हैं:-

एवंम : धर्म प्रचारयम भविष्यति यदा कलौ ॥
तदा वैलोक रख्यरखम मलेछाना नाश हेतबे ॥
पश्चिमें तो शुभम देशे बेदी बंसेच नानकौ ॥

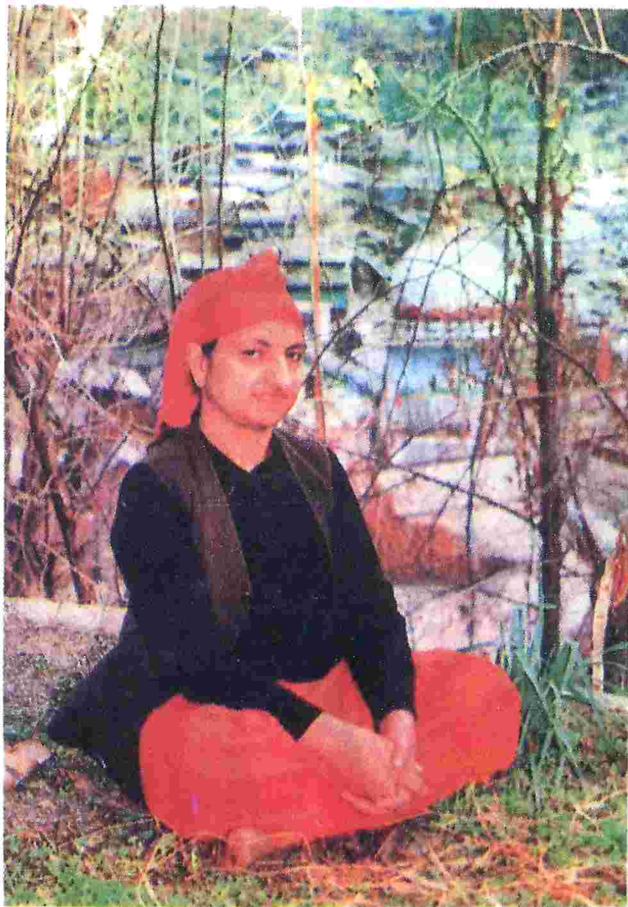
गुरू नानक परम जोती सरूपं ।
कलू काल पांप भई भूम भारी
गऊ रूप धारी हरि पै पुकारी ।
तभी देहधारी मुरारी अनूपं, गुरू नानक परम जोती सरूपं ।
सो कालू पिता धामं लीनो अवतारो
सभी जीव को आप दीनो उधारो ।
महा तेज छाजै करे कौन उपारं, गुरू नानक परम जोती सरूपं ।
त्रेलोक नाथ महा तेज धारी ।
भगत रख्या हेतप्रगट मुरारी।
सदा सच्च चेतन आनंद रूपं गुरु नानकं परम जोती सरूपं ।
महा ध्यान रूपद सदा सति सीले ।
रहे मस्त होइ हो परम प्रबीने ।



सचखंड वासी संत बाबा नारायण हरी जी महाराज

आप जी ने सन् 1940 में इस महान स्थान की खोज की और निर्माण आरम्भ कर दिया और अंतिम पावन श्वास तक इस स्थान की सेवा करते रहे।

1909-1989



संत बाबा देवा जी महाराज

भइयों है प्रकाश मिटे अंध रुपं गुरू नानकं परम जोती सरूपं ।
गुरू ग्रन्थ साहिब को है उचारं।
कई जीव जंत भए सिंधु पारं ।
पढ़े जो सुणे प्रेम कर अनूपं, गुरूनानकं परम जोती सरूपं ।
जिनि दरस पाइओ तिनि मोहि पाईओ
नहीं फेर आइओं प्रभु में समाइओ।
नहीं चाह कोई सदा सति रूपं, गुरूनानकं परम जोती सरूपं ।
लगी नाम डोरी नहीं सुध होरी
सदा ही समाधो विखे बिरती जोरी ।
रहे मस्त होइ परमात्म सरूपं, गुरू नानकं परम जोती सरूपं
पढ़ियां अशटक वासना चित लाई ।
टूटे सरब बंधन महा मोख पाई ।
सदा ही बसे चरण गुरू के समीपं, गुरू नानंक परम जोती सरूपं

प्राचीन शास्त्रों अनुसार कहते हैं कि इस स्थान के स्नान का अठसठ तीर्थों के स्नान के बराबर महात्मय है। ऐसी अगम्य और प्रेम भरी लहर उठती है जो पापी जीवों को भी सत्य संतोषी दायरे में ले जाती है।

"जन परउपकारी आए ॥
जीअ दान दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥"

संत बाबा नारायण हरि जी, जो अपनी पूर्ण आयु महान् प्रतापी, तेजस्वी, तपस्वी, कर्मयोगी, आत्मखोजी परमात्मा रूप हो कर पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी की जीवन-मुक्तावस्था के क्षेष्ठ सहज आनंद को प्राप्त करने के पश्चात् 22 फरवरी, 1989 को दिवस बुधवार भीनी रात्रि के प्रभात-काल मणीकरण साहिब के सन्त-सरोवर में परमानन्द ब्रह्म की परमज्योती में लीन हो गये थे कलियुग के घोर अन्धकार में सतयुग का प्रकाश करने वाले अनमोल इश्वरीय महापुरूष रत्नों में से एक थे।

अनुभवी महापुरुष सदैव यही सत्य बताते हैं कि अकालपुरूष परमात्मा स्वयं समय समय पर ऊँची पावन सत्य स्वरुप पवित्र आत्माओं को अपनी अलौकिक दैवी शक्तियों सहित पूर्ण करके पैगंबरों, गुरु अवतारों, पीरो फकीरों तथा साधू संतजनों का स्वरूप देकर मात लोक के जीवों का कल्याण करने के

लिए इस संसार में भेजता है। ये अपने जीवनकाल में सतिगुरू का जाप तथा प्राणी मात्र की सेवा का चमत्कारपूर्ण लीलामय मेहनत द्वारा धर्म का ऐसा प्रकाश उत्पन्न करते हैं कि अज्ञानता तथा मोह-माया के अन्धेरे में भटके हुए संसारिक लोगों को ज्ञान मार्ग तथा ठीक मंजिल की समझ आसानी से हो सकती है।

इसी प्रकार ऐसे एक पूर्ण ब्रह्म व्यक्तित्व संत बाबा नारायण हरि जी का जन्म ज़िला कैमलपुर (पाकिस्तान) की तहसील फतहि जंग गांव हतार के प्रतिष्ठिन भाई जवाला शहाय जी के गृह भाग्यवान् माता लाजवंती जी के उदर से सन् 1909 में हुआ। माता पिता ने नाम नारायण सिंह रखा जो बाद में नारायण हरि के नाम से आप की पहचान प्रसिद्ध हुई। ये दैवी नूर झुले में खेलता ही था कि एक दिन रमते साधू ने संत बाबा जी के मासूम बालकमुख को ध्यान से देख कर वचन किया यह बच्चा भाग्य वाला है, यह या तो राजा बनेगा या साधु। संत बाबा जी ने पूर्व जन्मों के पुण्य कर्म तथा शिरोमणि संस्कारों के फलस्वरूप अपने लिए साधू मार्ग निश्चित किया और बचपन से ही दृढ़ निष्ठा के साथ कठिन तपस्या आरम्भ की। संत बाबा जी बहुत अमीर घराने के इकलौते लाडले पुत्र और आप से बड़ी पांच बहनों के लाडले भाई थे। बहुत छोटी आयु में यद्यपि दुनियावी माता पिता की छत्रछाया न रही परन्तु चाचा, भाई दीवान चंद जी, चाची सोमावती जी और बुआ के प्यार दुलार और घनिष्ठ स्नेह ने बाबा जी को पाल-पोस कर बड़ा किया। बाहरह वर्ष की आयु में संत बाबा जी का विवाह रावलपिंडी की अमीर निवासी स. निहाल सिंह की सुशील सुंदर सुपुत्री बसंत कौर के साथ बड़ी खुशियों के साथ हुआ, परन्तु परमेश्वर के नाम की लगन के साथ जुड़े हुए बाबा जी के हृदय तथा विरक्त वैरागी मन को घर-परिवार के मीठे मोह के रेशमी धागे बाँध कर न रख सके। आप सभी कुछ त्याग करके सत्य की खोज में चल पड़े।

संत बाबा जी छोटी बालावस्था में ही रात्रि को शमशानों में जाकर बैठ जाते, खाने-पीने तथा शरीरिक सुखों का त्याग करके मन तथा चित्त-वृत्तियों का एकागर करने का अभ्यास करते थे। इसी तरह आप जी की मानसिक स्थिरता तथा स्थिर अवस्था निरंतर दृढ़ होती गई। वह समय भी शीघ्र आ गया जब आप ने एक लोई ली और तीर्थों की पैदल यात्रा करने के लिए घर से चल पड़े। श्री दरबार साहिब की परिक्रमा में कुछ समय बैठ कर यहीं से गुरुद्वारों की सेवा आरम्भ की। यहां से श्री हजूर साहिब पहुंचे। वहां सच्ची श्रद्धा सहित अमृतपान किया। अवचल नगर के पावन धर्म स्थान की सेवा का तथा सत्संग द्वारा नाम-योग और

प्रेमा-भक्ति की तपस्या में स्वयं पूर्णतः लीन हो गये। वहां आप कुछ समय रहकर विभिन्न कौतक देखते हुए तथा यात्रा करते हुए फिर पंजाब की धरती आनन्दपुर साहिब में आ गये।

यही आनन्दपुर का आनन्दमय स्थान था जहां माता बसंत कौर के पिता और अन्य सगे सम्बन्धियों की विनती और पुकार को स्वीकार करते हुए संत बाबा जी ने त्यागी पत्नी जो अपने साथ योग-समाधी प्राप्त करने की आज्ञा दी। यहां प्रकृति के रमणीक चारों ओर 'गुरु के लाहौर' में संत बाबा जी ने बहुत समय तक संगतों की सेवा के लिए लंगर की कईं देगें अर्पित की और कथा कीर्तन किये।

अकाल पुरुख परमात्मा के हुकम में बाबा जी के लिए अभी अन्य उद्देश्य निश्चित किये हुए थे जो आप ने मणीकरण हरि हर घाट पर पहुंच कर पूर्ण करने थे। इसलिए आप संत माता जी सहित 'गुरु के लाहौर' से भुंतर के लिए रवाना हो गये, भीष्म पहाड़ी भागों पर पैदल चलते हुए मंडी पहुंचे। उस के पश्चात् भुंतर आ कर कुछ चलीएं किये, यज्ञ भंडारे लगा कर सेवा तयाग के वे चमत्कारपूर्ण दृश्य दिखाए कि वहां के निवासी आश्चर्य में पड़ गये। संत बाबा जी ने अपनी मंजिल पर पहुंचना था। इसी ईश्वरीय आदेश की पालना करने के लिए दोनों सन्यासी जीवों ने पुनः पार्वती नदी किनारे चलना आरम्भ कर दिया। अन्त खीर गंगा के बरफानी पहाड़ों की चोटी पर पहुंच गये। इस स्थान पर स्वयं बाबा जी और उनकी आज्ञाकारी त्यागी सुपत्नी के लिए अधिक तपस्या की टकसाल में बनने का था। यहा इन दोनों संत महानुभावों को आत्मिक कमल-विकास तथा शुद्ध कंचन रुप प्राप्त हुआ। आप ने आने वाले भविष्य के लिए परिपूर्ण होकर बाबा मणीकरण में भाग लगाये।

भगवान् शिव जी के तपो खण्ड का यह पावन भाग हरि हर घाट था यहां संत बाबा जी ने अपने जीवन का दीर्घ समय व्यतीत किया, आप की सोन सुनहरी जगमगती आत्मा के प्रत्यक्ष दर्शन करके यह समूची धरती सुन्दर तथा शोभनीय बन कर भरपूर बनने लग पड़ी और संत बाबा जी के महान पावन चरणों के स्वर्श का सुभाग आधी शताब्दी तक प्राप्त करती रही है।

इस काल में बाबा जी ने अपने हाथों सेवा साधना में एक महान तीर्थ और श्री गुरू नानक देव जी के पवित्र धर्म स्थान की स्थापना कर दी। संत बाबा जी के व्यक्तित्व और चरित्र में ईश्वरीय गुणों का प्रकाश तो हो गया था, आप गुरमति का साक्षात वास्तविक रूप थे। आप परम सत्य, आदि धर्म, ब्रह्मज्ञानी, मानव एकता

पूर्ण प्रेम, अहिंसा समदृष्टि, क्षमा, गरीबी, सहनशीलता, प्राणीमात्र की रक्षा, सहायता तथा सेवा का समुचा रूप थे। इसी प्रकार संत माता जी भी सेवा और जपु समाधी की मूर्त थे। आप दोनों शरणागतों और अभ्यागतों की हर समय तन, मन तथा धन से लंगर आदि की सेवा करने के लिए तत्पर रहते थे।

संत बाबा जी ने यहीं ही आकाशवाणी श्रवण की, आज्ञा परमेश्वर की ओर से हुई तो आप ने भगवान् शिव के सहस्त्र वर्ष पुरातन तपोस्थान पर कार-सेवा करके शिव जी महाराज के मंन्दिर की स्थापना की। श्री गुरू नानक देव जी के अवतारी चरणों का स्पर्श प्राप्त करके पवित्र पत्थर को प्रकट किया, और ईश्वर रुप गुरु बाबा नानक की ऐतिहासिक याद के चिनह रुप में गुरुद्वारा साहिब की नींव रख के जागती ज्योति शब्द गुरु ब्रह्म श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश किया। संत बाबा जी ने तो समझो उस समय की शमशान भूमि के तल पर सचखंड के निर्माण का कार्य सिर पर ले लिया था जो बाबा जी के ईश्वरीय विश्वास के साथ पूरा हो गया। इस समय कई मंजला आलीशान गुरुद्वारा, स्नान के लिए आसानी से प्राप्त गर्म जल, सरोवर, झीले, लंगर का रमणीक हाल, शान्त सुखमय विश्राम घर के कमरे, संतपुरा, ऋषि कुटिया और नारायण पुरी की रचना देख कर मनुष्य की आंखें अगम्य प्रकृति के सौंदर्य के दर्शन करके प्रसन्न हो जाती है। यदि बाबा जी ने संगतों की शरीरक-भूख की संतुष्टि के लिए आठों पहर सात्विक भोजन लंगर का प्रबन्ध पक्का किया हैं वहां महान् परोपकारी बाबा जी ने मानव के आध्यात्मिक कल्याण, सत्य और पवित्र संसारी जीवन यापन बिताने के लिए परम धर्म का प्रकाश ऊँचा किया है, क्योंकि आप प्रभु की दरगाह से एक मिशन लेकर आये थे, उस को ठीक ठाक अर्थों में पूर्ण करने के लिए गुरुवाणी का रहस्यमयी कथन प्रकट किया:-

वासुदेव सर्वत्र महि ऊन न कतहू ठाए ॥

अंतरि बाहरि संग है नानक काए दुराए ॥

परन्तु इतिहास गवाह है कि ऐसे पूर्ण महापुरूषों को भी ऊंचे कार्यों के लिए समय का बुरा करने वाली अधर्मी शक्तियों का सामना करना पड़ता है। संत बाबा जी को लम्बा संघर्ष करना पड़ा। झूठे मुकदमों की परेशानी उठानी पड़ी। आप को कई प्रकार के कष्ट सहने पड़े परन्तु बाबा जी कर्म के शुरवीर तथा वचनों के पूर्ण परमेश्वर के कार्य की सेवा समाधी मान कर स्थिर तथा अडोल रहे।

संत बाबा जी का दर्शन बहुत आनंददायक था। आप के दैवी मुख पर विकसित हुए सहज मन की महकती प्रसन्नता और निर्मल छवि सदैव स्वच्छ प्यार का दीदार झलकता रहता था, आप की ब्रह्म दृष्टि ऐसे देखती थी कि वाणी के अनमोल वचन सत्य होते थे :-

सभे सांझीवाल सदाइनि कोऊ न दिसै बाहरा जीओ ।।

और भगवान् श्री कृष्ण जी का ब्रह्मापुदेश ऊंचे कर्म रूप में छलकारे मरता था।

हे अर्जुन! सबको मेरे में देख । -

मेरे को सब में देख ।

संत बाबा जी के जीवन का यह बहुत बड़ा करिश्मा था जो आप ने सभी धर्मों की मौलिक एकता दृढ़ करने के लिए मानव जाति को अपने ईष्ट की पूजा बंदगी की बराबर स्वतन्त्रता का आदर्श दिया। आप जी ने कथा कीर्तन सत्संग विचार द्वारा बैकुन्ठ के द्वार खोले हुए थे :

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ ऐकु ऐकु वखाणीऐ ।।

आतमु पसारा करणेहार प्रभु बिना नहि जाणीए ।।

आप जी का समस्त जीवन सतगुरू तेग बहादुर साहिब जी के शब्द "जो नरु दुखि महि दुख नहीं माने" और दशम पातशाह श्री गुरू कलगीधर महाराज जी की वाणी:"रे मन ऐसौ करि सनिआसा" के दर्शन का सितारों की तरह चहकता अमल या आनन्दमय रूप था। सेवा पुंज बाबा जी की सच्ची संतुष्टता सदा इसी में रही कि समस्त जीवों का यात्री संगतों को बिना किसी तरह भिन्न भेद-अथवा - भेदभाव के सुख विश्राम देने के लिए सम्भव साधन और प्रयत्न हों, अपनी सदैव इच्छा और प्रसन्नता की पूर्ति के लिए आप जी ने दिन रात के अटूट लंगर आरम्भ किये। सुन्दर समागम किये, दोनों समय कीर्तन की अमृत वर्षा की। संत बाबा जी की उपस्थिति में जब सत्संग अथवा कीर्तन भक्ति का क्रम घंटो तक लगातार चलता रहता तो दूर दूर तक एक कोने से दूसरे कोने तक परम शन्ति और सत्य, वैराग्य की विराट थरथराहट तथा लहर फैल कर मानवी-मनों को परमेश्वर की एकता में पिरो देती थी। आप जब मीठे स्वर में "जिनी मुहबतां लाइयां मुहबतां दिलां दीआं तथा ओम् हरे राम-हरे-श्री राम-राम हरे" की ध्वनि लगाते तो समस्त वातावरण प्रेम और एकता की स्वच्छता से भर कर गूँज उठता था, जब आप

निराकार परमेश्वर की प्रेम पूजा में साकार आरती करते थे तो देवी-देवता शंखों का अनहद नाद बजा कर दरबार साहिब के कण-कण को संगीतमय बना देते थे, वह दृश्य बहुत मनमोहक तथा आश्चर्य से भरपूर होता था।

संत बाबा जी ने केवल पार्वती गंगा के दोनों तटों को मिलाने के लिए ही पुल नहीं बनाया अपितु आप ने मानवी आत्मा तथा परमात्मा का मिलाप करने के लिए धर्म स्थान का सेतु तैयार किया। इच्छुक जीवों को शिक्षा दी कि अहम् का त्याग, परमेश्वर के नाम तथा धर्म श्रद्धा धारण करना अनिवार्य है, शरीर के आहार के लिए सात्विक भोजन पर अधिक बल देते थे, क्योंकि यह आहार अंहिसा, प्यार और दया की उपजाऊ धरती है। संत बाबा जी ने मानव जाति पर उपकार करते हुए अपने जीवन में अनगिनत सच्चे सौदे किये एवं अन्त में बहुमूल्य वाणिज्य आहार का लाभ प्राप्त करके परमेश्वर की दरगाह का आदेश मिलते ही प्रियतम वाहेगुरू के चरणों में इस तरह पहुंच कर विराजमान हुए-

"जिउ जल में जल आए खटाना तिउ ज्योति संग जोत समाना" ॥

आप जी के शिरोमणि उपदेशों का धारण करने वाले गुरुमुख जीवों को मणीकरण के सतयुगी तीर्थ पर संत नारायण हरि जी द्वारा जागृत ज्योति, खुदाई खलकत के प्यार तथा सेवा भावना का ऊँचा संदेश समसत मंडल के वातावरण मे से मीठी रस भीनी ध्वनि में सुनाई देता रहेगा । यहां जिज्ञासु जीवों की अतृप्त आत्माओं को अपनी वास्तविक मंजिल के चिन्ह मिलते रहेंगे ।

संत बाबा जी की महिमा अगाध हैं, इस का कथन व्याख्यान अल्प बुद्धि की सीमा से परे है।

साध की महिमा बेद न जानहि ॥
ब्रहम ज्ञानी की गति ब्रहम ज्ञानी जानै॥

संत बाबा जी के ध्यान में अनुरक्त श्रदालु के मुख से तो 'धन्य कमाई' धन्य कमाई के शब्द निकलते और गुरुवाणी का महान वाक्य

आपि मुकत मुकत करे संसार ॥
नानक तिस जन कउ सदा नमस्कार ॥

रसना पर आ जाता है।

देवा जी पावन तीर्थ मणीकरण में 4 दिसंबर1942 को जन्मे पूर्ण प्रेम, त्याग

दया की मूरत संत बाबा जी की बडी सपुत्री हैं तथा दिन रात सेवा में समय व्यतीत करके आनंद महसूस करती हैं। अपने माता-पिता से सत्य धर्म की प्रेरणा लेते हुए बचपन से ही केवल ब्रह्मनंद का सुख प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य व्रत धारण किए हुए पूर्ण निष्ठा पूर्वक, गम्भीरता सहित धर्म कार्य में लगे हुए हैं। ब्रह्मज्ञानी पिता जिनका हमेश वो गुरूरूप में दर्शन करके सम्मान करते थे के सचखंड गमन पश्चात् चलाई हुई मर्यादा अनुसार उनके पद् चिन्हों पर चल रहे हैं।

पंजा साहिब के नजदीक हरीपुर जिला हजारा में 14 अप्रैल 1946 को जन्में सन्त बाबा जी के दामाद बाबा श्री राम जी जो कि उनकी छोटी सपुत्री बीबी हरभजन कौर जी के पती हैं जिन को सचखंड गमन करने से पहले ही आपने हाथों से हरमोनिअम दे करके कीरतन की दात बख्शीश करके अपना रूप दे गए थे बडे प्रेम और लगन से पूज्य संत बाबा जी के सतसंग के चलाए हुए प्रोगराम से को बड़ी निषठा और कुशलता से निभा रहे हैं।

राखे ज्यों प्रभु त्यों खुशी में ही रहना।
कबहुं गृहवासी कबहुं बनवासी, कबहुं पूर्ण आसी, कबहुं हो निरासी।
सभी कर्म को योग से ही सहना । .... ।१।
कबहुं मिश्ट पाई, कबहुं शुष्क पाई, कबहुं द्रव्य पाई कबहु सो गवाई ।
दिले हर्ष कि शोक काहुं न लेना, राखे ज्यों प्रभु...................... ।२।
कबहुं पाव प्यादे चली पंथ जाना, कबहु वाहन सुविमान समाना ।
कबहुं दान देना, कबहुं दान लेना । राखे ज्यों प्रभु...................... ।३।
कबहुं श्रेष्ठ भूपाल सन्मान देवे, कबहुं कोप से घर लूटी वो लेवे ।
तऊ राखिये चित्त में सुख चैना । राखें ज्यों प्रभु...................... ।४।
कबहुं है संयोगी, कबहुं है वियोगी, कबहुं है निरोगी, कबहुं होय रोगी ।
मुखो बोलिये न बनो भीरू बैना । राखे ज्यों प्रभु...................... ।५।
कबहुं ब्याह ओछन के योग आवे, कबहुं शोक सिंधु हुं विधाता बनावे
नहीं रोये के डालिये नीर नैना। राखे ज्यों प्रभु...................... ।६।
कबहुं आप राजा बनि राजा कीजे, कबहुं नीच की चाकरी चाहे लीजें
भली कि बुरी यों कुछ नहीं कहना। राखे ज्यों प्रभु .... ।७।
कबहुं हस्तिनी फूलों की माला डाले, कबहूं शस्त्र से आई शत्रु हारे।
धरे धीर धीराई धोखा रखे न । राखे ज्यों प्रभू...................... ।८।
राखे ज्यौं प्रभु त्यों खुशी में ही रहना ।

श्रीमान् संत बाबा नारायण हरि जी के

※ अनमोल वचन ※

दस नियम पालन करने योग्य

1. सच्च बोलना, 2. किसी का दिल न दुखाना, 3. चित्त और इन्द्रियों को सुचारू रुप से चलाना, 4. आचार, विहार, आहार ठीक रखना, 5. कुसँगति से बच कर सत्संग में रहना, 6. काल को हर समय सिर पर देखते रहना, जो कुछ प्राप्त हो उसी में प्रसन्न रहना, 7. निर्वाण के लिए प्रयत्न करना परन्तु भरोसा ईश्वर पर रखना, 8. नितनेम में नागा न करना, 9. मैं क्या हूं, जगत क्या है बंधन और मुक्ति क्या है इस का विचार सदा रखना, 10. अपने कर्मों का हिसाब प्रतिदिन देखते रहना ।

※ अनमोल मोती ※

1. लेना चाहते हो तो आर्शीवाद लो 2. मारना चाहते हो तो बुरी आदतों को मारो 3. जीतना चाहते हो तो तृष्णा को जीतो 4. खाना चाहते हो तो क्रोध को खाओं 5. पीना चाहते हो तो हरि नाम रस का पान करो 6. पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो 7. देना चाहते हो तो विनम्र होकर दो 8. जाना चाहते हो तो तीर्थ स्थान और प्रभु की शरण में जाओ 9. करना चाहते हो तो दुखी जनों की सेवा करो 10. छोड़ना चाहते हो तो पाप को छोड़ो 11. बोलना चाहते हो तो सच्च और मीठे वचन बोलो 12. तोलना चाहते हो तो बात को तोलो 13. सुनना चाहते हो तो ईश्वर की महिमा और दुखी जनों की पुकार सुनो।

चार बेद छः शास्त्र में बात मिली है दोय ।।
सुख दीने सुख होत है, दुख दीने दुख होय ।।

सूचनायें

1. ऐतिहासिक कुण्ड, जहां श्री गुरु नानक देव जी ने मरदाने से लंगर तैयार करवाया था गुरुद्वारे और शिव मन्दिर के साथ है। सारा लंगर और चाय इसी कुण्ड में तैयार होता है।

2. श्री गुरु नानक देव जी के चरणों के साथ पवित्र हुआ स्थान "गर्म गुफा" गर्म कुण्ड के पास है।

3. सचखंडवासी संत बाबा नारायण हरि जी का तप स्थान जो कि पुल के पार है, श्री सप्ताह पाठ के भोग के दिन सुबह साढ़े नौ बजे दर्शनों के लिए खोला जाता है।

4. "नारायण पुरी" जो कि संत बाबा नारायण हरि जी का तप स्थान है, यहां से 1.5 किलोमीटर है। इसका रास्ता बाजार में से जाता है, वहां पर चाय का लंगर चलता है।

5. पूज्य देवा जी के दर्शनों के लिए श्रद्धालु लंगर हाल के दाई तरफ कमरा नं० 93 में शाम आठ बजे जा सकते हैं।

6. आरती का समय सुबह 6-30 बजे और शाम 8-30 बजे है। संगत की इच्छानुसार शाम आरती समय के मणीकरण का इतिहास सुनाया जाता है।

7. घर ले जाने के लिए प्रशाद आपको बाबा श्री राम जी कमरा नं० ७२ में सुबह 8 बजे, दोपहर 2-30 बजे, शाम 8 बजे और रात्रि 10-15 बजे देंगे।

8. घर ले जाने के लिए अमृत जल आप लंगर हाल में पड़ी स्टील की टंकी में से ले सकते है।

9. यहां पर लंगर, प्रशाद और इमारत की रसीद नहीं काटी जाती, श्रद्धालु अपनी इच्छानुसार भेंट दान पात्र में डालें।

10. पुरानी मैंम्बरशिप के लिए कमरा नं० 72 में सुबह 8-00 से 9-00 बजे तक, दोपहर 2-30 से 4-00 बजे तक, और रात 10-15 से 10-30 बजे तक सम्पर्क करें।

11. जो भी स्त्रियां व पुरुष अंडा-मीट, बीड़ी सिगरेट और शराब को प्रयोग नहीं करते, लंगर बनाने की, लंगर बरताने की या श्री दरबार साहिब की डयूटियों की सेवा कर सकते हैं।

12. नहाने के लिए प्रथम तल पर पुरुषों व स्त्रियों के लिए, अलग-अलग सरोवर हैं, इसके इलावा पुल के पार सरोवर पर कपड़े धोने का स्थान है।

13. ठहरने के प्रबन्ध के लिए लंगर हाल में सेवादार से मिलें और वापिस जाते समय कमरे की चाबी जोड़े घर के सामने लाल बक्शे में डालें।

14. शैचालय तीसरी व चौथी मंजिल पर है। इसके अलावा प्रथम तल पर पुरूषों के सरोवर के सामने भी हैं। पुल पार भी शौचालय है, कृप्या सफाई का विशेष ध्यान रखें।

15. गुरुद्वारा साहिब में दो दिनों से अधिक ठहरने के लिए आज्ञा लेनी व सेवा करनी आवश्यक है।

16. गुरुद्वारा साहिब की हद्द में अंडा, मीट, बीड़ी, सिंगरेट और शराब का सेवन करना अथवा ताश खेलना सख़्त मना है।

17. परम-पूजनीक सचखंडवासी संत बाबा नारायण हरि जी की बरसी हर साल 6 फगण से 12 फगण तक मनाई जाती है।

18. सलाना समागम को प्रोग्राम आठ दिनों का होता है, जिसका भोग बुद्ध पूर्णिमा के दूसरे दिन पड़ता है।

19. गुरुद्वारा साहिब में स्टीकर लगाना मना है।

20. नोट :- पता चला है कि कई गलत लोक गुरुद्वारा मणीकरण के नाम पर रसीदें छपवा कर पैसा और रसद संगतों से इकट्ठा कर रहे हैं। कई अपने आपको मणीकरण का कथा वाचक या रागी बता कर संगतों को गुमराह करते हैं। आप जी की सेवा में निवेदन है कि यदि आप ने पैसे भेजने हों तो बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा सीधे गुरुद्वारा साहिब के पत्ते पर भेज सकते हैं



बाबा श्री राम जी
गुरुद्वारा साहिब और आए यात्रियों
ी सेवा संभाल सब आप ही करते हैं।